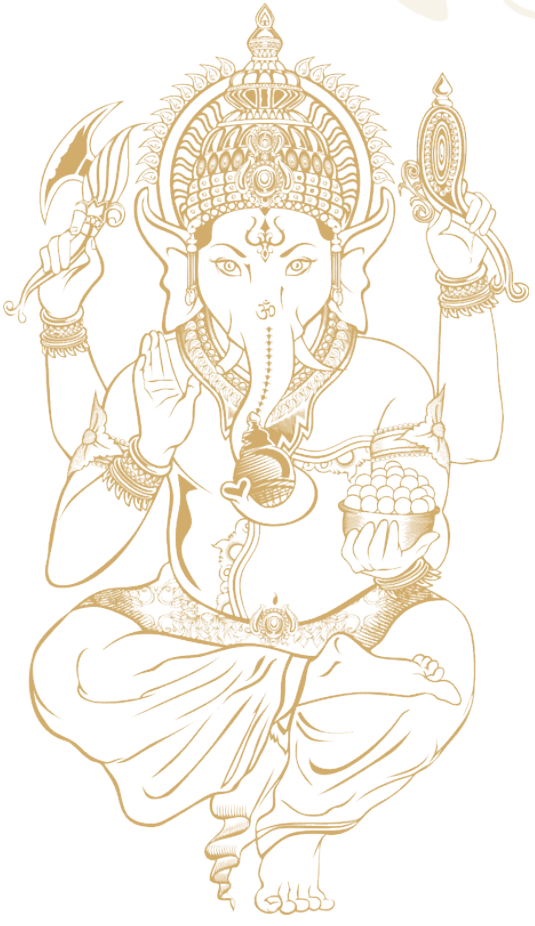

YOGINDER CHATANTA

GUNJAN JHAKTA TIPROG

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120166702

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
18/09/1991 :	जन्म तिथि	: 8-09/07/2002
बुधवार :	दिन	: सोम-मंगलवार
घंटे 09:30:00 :	जन्म समय	: 01:20:00 घंटे
घटी 08:32:52 :	जन्म समय(घटी)	: 49:54:31 घटी
India :	देश	: India
Jubbal :	स्थान	: Chaupal
31:05:00 उत्तर :	अक्षांश	: 30:56:00 उत्तर
77:40:00 पूर्व :	रेखांश	: 77:35:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:19:20 :	स्थानिक संस्कार	: -00:19:40 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:04:51 :	सूर्योदय	: 05:22:53
18:23:19 :	सूर्यास्त	: 19:26:12
23:44:45 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:53:16

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 1वर्ष 10मा 19दि		14:07:58	तुला	लग्न	मेष	20:10:40	मंगल 2वर्ष 3मा 4दि	
राहु		01:00:39	कन्या	सूर्य	मिथु	22:34:43	गुरु	
07/08/2016		25:24:32	धनु	चंद्र	मिथु	02:21:29	12/10/2022	
07/08/2034		17:12:51	कन्या	मंगल	कर्क	03:00:50	12/10/2038	
राहु	20/04/2019	17:59:43	सिंह	बुध	मिथु	08:43:59	गुरु	29/11/2024
गुरु	13/09/2021	07:30:04	सिंह	गुरु	कर्क	00:47:10	शनि	13/06/2027
शनि	20/07/2024	27:41:51	कर्क	शुक्र	सिंह	03:47:19	बुध	18/09/2029
बुध	06/02/2027	06:41:01	मक व	शनि	वृष	28:18:38	केतु	25/08/2030
केतु	24/02/2028	22:50:52	धनु व	राहु व	वृष	23:49:26	शुक्र	25/04/2033
शुक्र	24/02/2031	22:50:52	मिथु व	केतु व	वृश्चि	23:49:26	सूर्य	11/02/2034
सूर्य	19/01/2032	16:05:25	धनु व	हर्ष व	कुंभ	04:27:17	चन्द्र	13/06/2035
चन्द्र	20/07/2033	20:15:37	धनु व	नेप व	मक	16:19:47	मंगल	19/05/2036
मंगल	07/08/2034	24:32:29	तुला	प्लूटो व	वृश्चि	21:35:33	राहु	12/10/2038

लग्न-चलित

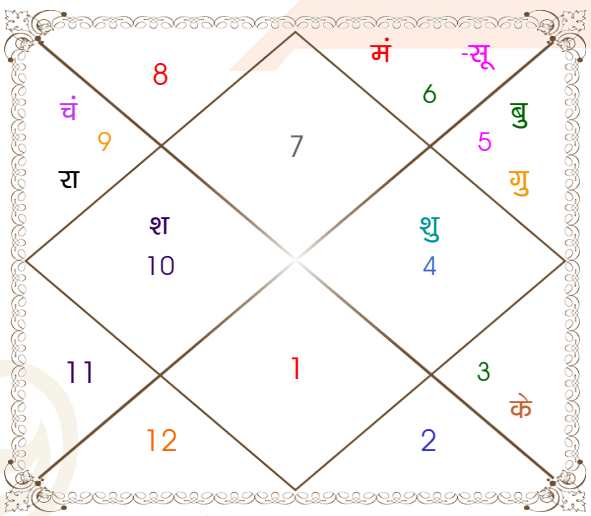

लग्न-चलित

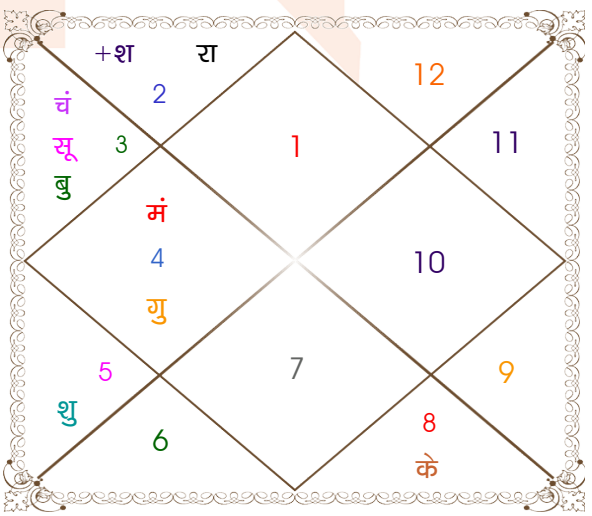

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	सर्प	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	बुध	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	मिथुन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	18.00		

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि GUNJAN JHAKTA TIPROG का नक्षत्र मृगशिरा है।

YOGINDER CHATANTA का वर्ग श्वान है तथा GUNJAN JHAKTA TIPROG का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार YOGINDER CHATANTA और GUNJAN JHAKTA TIPROG का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

YOGINDER CHATANTA मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल YOGINDER CHATANTA कि कुण्डली में द्वादश भाव में कन्या राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

GUNJAN JHAKTA TIPROG मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल GUNJAN JHAKTA TIPROG कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल GUNJAN JHAKTA TIPROG कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु GUNJAN JHAKTA TIPROG कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि YOGINDER CHATANTA कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु YOGINDER CHATANTA कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

YOGINDER CHATANTA तथा GUNJAN JHAKTA TIPROG में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।